स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	<u> </u>
L	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।	
IĘ	ग्रन्थ ज्ञान मूल	섥
सतनाम	साखी - १	सतनाम
L	सत वर्ग सर्व ऊपरे, सखा पत्र सब जीव।	
सतनाम	जल थल सब में व्यापिया, साच सुधारस पीव।।	सतनाम
捆		17
L	आदि अन्त के ऊपर मूला। डार पात बिविधि जग फूला।१	
सतनाम	अक्षय वृक्ष क्षय होत न कबहीं। सार शब्द कहत हीं अबहीं।२	सतनाम
堀		
	यह धरणी कवि केते भैऊ। आदि अन्त के पार न कहेऊ।४	
सतनाम	भोष अलेखा भाक्त वैरागी। त्रिगुण गुण में सब केहु जागी।५	सतनाम
lk		
L	शिक्ति माया है सबके पासा। भोजन भाव औ नींदिहं ग्रासा।७	
सतनाम	वोए ब्रह्म अखन्ड खन्डित नहिं कहई। सो जिन्दा जग जागृत अहई।८	124
F	उनके कबिहें शिक्त निहं साथा। जो जन सुमिरिहं होिहं सनाथा।६ वोए योनि संकट कबिहं निहं आवे। यह भेद बिरला जन पोवे।१०	1 -
_		
सतनाम	वोए साहब अतीत अपार हैं, त्रिगुण गुण के पार।	सतना
F	उपजि विनसि रहि जात सब, वोए तो रंग करार।।	围
   	2 6	세
सतनाम	राज रोग भोग सब माँगा। नीच ऊँच शक्ति सुखा पागा।११	सतनाम
	नृप मन्दिर में यह सुख भैऊ। अन्तकाल दुःख दारुण पैऊ।१२	
E	। झठ मीठ साँच गण तीता। वद्ध भौ व्याधि तन कीता। १३	   4
सतनाम	झूठ मीठ साँच गुण तीता। वृद्ध भौ व्याधि तन कीता।१३ सतगुरु मत अन्त के कामा। तन छूटे पहुँचे निजु धामा।१४	
	करि बिलास पुहुप की खानी। पुहुप वेमान रस अमृत सानी।१५	
E		
सतनाम	कहेउ विवेक विचारहु ज्ञानी। सार शब्द है अमृत बानी।१६ छप लोक शहर गुलजारा। साहब बचन मैं कीन्ह विचारा।१७	
	है यह साँच झूठ जिन जाने। झूठ बूझे तेहिं यम धरि ताने।१८	
1	छपलोक से मम चिल अएऊ। पीछे साहब दर्शन मोहिं दियऊ।१६ जिन्दा रूप गुण गहिर गंभीरा। दयावंत निर्मल गुण थीरा।२०	석
<b>HIG</b>	जिन्दा रूप गुण गहिर गंभीरा। दयावंत निर्मल गुण थीरा।२०	클
	ातनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_ '
7	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतन	דיו

स	तनाम र	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	प्रेम सुध	ारस बो	लहिं बार्न	। लागि	झरि अमृत	रस सार्न	ो।२१।
सतनाम	हमसे खु				झरि अमृत गादा निर्मल		5   2 2   4 1 1
		छप	लोक है शहर	हमारा, जग	बु दीप पगु ढार्ग	रे।	
सतनाम		तुम	कारण यहाँ	आइया, बोर्व चौपाई	ने बचन बिचारि	[1]	1 1 1 1
	छोड़ा त	ख्त दोलै	चा सेज्य	। करन	आये सुकृत	त की रक्षा	ा२३।
सतनाम					त भाव मेर त सुगन्ध प्रेः	•	1
		_	`	•	आनन्द हंस		।२६।
सतनाम	दीप दीप	सब दे	रेखा जाई	। चले	अदल जहाँ छापा दूजा	हंस पेठाई	1201
"	9		9	• • •	<i>C</i> /		
巨		-,			देखा बहुत	•	
सतनाम	_				सूरति आः		
"	जम्बु दाप	। कह द	खा आइ	_	आस कछु व	१६। न जाइ	{   3 9     -
<u> </u>			-	्साखी – १			4
सतन				_	विधि महल बन		1
"		भाव	त भाव नाह		या को गुण गाय	<b>TII</b>	
且	_	3.0	0 3	चौपाई	. 5	J. J	4
सतनाम	कहे राम				मांस ले मु		1-
"	आतम राग		•		न्धन यह नि		ई ।३३ ।
且	देवता दै	त्य नाहि	डं बिलगान -	_		्सँग सान	। १४।
सतनाम	हमको क	हा कव			निरंजन -		1.1
ľ	पण्डित म्	•			के घात पाप		ऽ।३६।
且	वेद पढ़ा				नतगुरु संग		। १७ ।
सतनाम	इमि करि				धक्का तुम		1-4
	अकूफ दी	ान्ह तुमव	•		ा करो देखा		ो ।३६ ।
크	निमेरा क	हरि निगः			आस सबन्हि		[   80   <b>4</b>
सतनाम	अस्सी ह	जार फौज	न चिल अ	ाई। गढ़ि	ढहाय सब	गर्द मिलाइ	[  80   <b> </b> 411
				2			
_स	तनाम र	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	— म
	साखी – ५	
ĮĘ.	कारन किन्हो तुम से, ग्रीद परा चहुँ घेरि।।	섥
सतनाम	बांन बुन्द छाटा हुआ, कहा बचन तुम टेरि।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	तख्त बैठाय यहाँ तुम्हें राखा। चिलहें पन्थ तुम्हारे शाखा।४२।	सतनाम
뛖	अहे अगम तुम जीव के राखो। एहि बचव आगे निजु भाखो।४३।	큨
L	छपलोक जहाँ हंस विराजे। छत्र मनोहर सब सिर छाजे।४४।	ا
सतनाम	अमृत झरि मेवा बहु भाँति। लागी झरि बर्षे चहुं पाँती।४५।	सतनाम
F	वहाँ किसान खेती नहिं करई। भरि भरि पीवे सदा सुख लहई।४६।	크
l ≖	हद पर अधरस देहु दिखाई। आधा लोक काश्मीर कहाई।४७।	4
सतनाम	अहे मेवा की बहु विधि खानी। अहे सुगन्ध फूल गुलाब बखानी।४८।	सतनाम
	बारह कोस शहर के भाऊ। भला है लोग साँच सब कहेऊ।४६।	
] 필	बहुत गुलाब अत्र तहाँ भयऊ। अति सुगन्ध साधु गुण लहेऊ।५०।	섥
सतनाम	जन्म भया फिरि मरि मरि गयऊ। कच्चा पिन्ड अमर नहिं रहेऊ।५१।	सतनाम
	साखी – ६	
ᆒ	अवनि अमर दोलइचा कहिये, बिनसि कबहिं नहिं जाय।	स्त
뙌대	जो आया सो खपि गया, बहुरि जन्म फिरि पाय।।	큪
	चौपाई	
सतनाम	अपनी सिकिलि सब जीव बनाया। अधरस भेद तुम्हें समुझाया।५२।	सतनाम
ᆌ	हम अडोल डगमग नहिं भायऊ। केता युग कल्प बिति गयऊ।५३।	귤
Ļ	आदमी नायब उलटि के पेखो। अविगति अगम तहाँ यह देखो।५४।	
सतनाम	बाहर भीतर झरि अमर अनूपा। पूछे बोले रहे यह चूपा।५५।	सतनाम
*	अगम निगम भोद कहि दियेऊ। गूँगा होय अमृत रस पियेऊ।५६।	4
E	खाली बात बके जनी एता। पूछे बोले प्रेम निजु हेता।५७।	섴
सतनाम	डोले जग में जहाँ तहाँ जाई। अकुफ हमार कहे समुझाई।५८।	सतनाम
	चुनि चुनि हंसा लेत निकारी। काल कुबुद्धि है दूरि करि डारि।५६। तुमसे भेद कहा सब नीका। विमल विरोग ज्ञान का टीका।६०। तुमके चिन्ही शब्द पहिचाने। अमर लोक पयाना ठाने।६१।	
सतनाम	तुमसे भोद कहा सब नीका। विमल विरोग ज्ञान का टीका।६०।	सत
सत	तुमके चिन्ही शब्द पहिचाने। अमर लोक पयाना ठाने।६१।	Ⅱ
   ===================================	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	 ਸ਼ਾ
<u> </u>	STOLE MALLEL MALLEL MALLEL MALLEL MALLEL MALLEL MALLEL	•

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>म</u>
Ш	साखी - ७	
目	भव जल में सब काग हैं, औ बक बाउर अन्ध।	4
सतनाम	मीन मांस कह खात हैं, ढूँढ़त वाको गन्ध।।	सतनाम
Ш	चौपाई	
सतनाम	साहब आय अगम होय गयऊ। कहाँ वह जाही हृदय महँ रहेऊ।६२।	सतनाम
뒢	दुई शहजादा अहे हमारा। चलो विचार ज्ञान उपकारा।६३।	園
	चंचल मन यह थिर करि लीजै। गुप्त भाव अमी रस पीजै।६४।	
सतनाम	रहिन गहिन है शब्द अमोला। बैन विचारि हंस सो बोला।६६५।	सतनाम
ᅰ	जीवन मरन है या तन खोहा। करो प्रेम सतगुरु से नेहा।६६।	크
	हाल हजूरी किह समुझाया। अझुरन झेल ताहि सझुराया।६७।	ايم
सतनाम	हुकुम बिसारे सो कम जाती। हुकुम जोगावे दिन और राती।६८।	सतनाम
<sup>B</sup>	बिना हुकुम पगु कतहीं न दीजै। कोर्निस किजै प्रेम नहिं छीजै।६६।	#
巨	हंस दशा गुण श्वेत सुहावे। श्वेते अमर दूजा निहं भावे।७०।	4
सतनाम	गुण गंभीर गुण सब मित थीरा। नैन झलके मिन जनु हीरा।७१।	सतनाम
	साखी - ८	-
-	पटतर दीन्हों मणि के, मणि बरोबर नाहिं।	स्त
सत	माँजे मकुर साफ दोउ दीदम, मम पकड़ो तुम बाहिं।।	필
Ш	चौपाई	
सतनाम	बाह बोल सतगुरु कनहरिया। खोई उतारेओं कहर है दरिया।७२।	सतनाम
湘	दरिया वारे पारे अहई। दरिया बीच जगत् इह अहई।७३।	큠
	दरिया में लाल जवाहिर अहई। मरिजीवा जो बुड़ि के गहई।७४।	
सतनाम	लेइ निकारि बाहर फिर देखा। धन्य धन्य सबिन्ह मिलि पेखा।७५।	सतनाम
ᄺ	दरिया नाम साहब का अहई। बेशुमार कथा किमि कहई।७६।	크
ᆈ	दरिआ मम दास कहाई। वृगासा कमल अमृत रस पाई।७७।	샘
सतनाम	भीतर हंस वंश यह लहेऊ। बाहर नाम सबे कोई कहेऊ।७८।	सतनाम
	बहु विधि बासन गढ़े कुम्हारा। ठोंकि ठाकि बाहर कै डारा।७६।	_
囯	धाये नर सब मोल मँगाये। कहीं सुगन्ध वासना नाये।८०।	섥
सतनाम	कहीं रस गोरस भारि लीन्हा। तामे दिध घृत जो कीन्हा। ८१।	सतनाम
ΓAI	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	4

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u> </u>
	साखी - ६	
픨	किहं कंचन मानिक भरा, किहं तामा है रूप।	섥
सतनाम	चीकन चाम बनाइया, राव रंक औ भूप।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	कहीं मदपी मदिरा भरि लीन्हा। सोई वोये वासना कीन्हा।८२।	섬
सत्	कहीं मदपी मदिरा भिर लीन्हा। सोई वोये वासना कीन्हा। ८२। कसाई कर्म रूधिर भिर कियेऊ। चमर कार मांस रिंधि दियेऊ। ६३।	큄
	ऐसे तन रचा बहु भाँती। भीतर काग सुकर की जाती।८४।	
सतनाम	कहीं मोती मिण माणिक छाया। कहीं रोर यह शोर लगाया। ८५। तीन सौ साठि बन्धन तेहिं लागा। तामें हंस किहं भौ कागा। ८६।	स्त
됐	तीन सौ साठि बन्धन तेहिं लागा। तामें हंस किहं भौ कागा।८६।	<b>1</b>
	एहि विधि भर्महि भव में जाई। चारि चरण दुई सींग बनाई।८७।	1
सतनाम	योनि संकट में फिरि फिरि आवे। साधु संगति कतहीं नहिं पावे।८८। पश्वत ज्ञान ताहि धरि बाँधे। आँखाि छपाय कोल्ह में नाधे।८६।	स्तन
ᇻ		
_	कहीं रहट में गिर्द फिरावे। कहीं बनिया बहु बोझ धरावे। ६०।	
सतनाम	परा चकोह चाक ज्यों घूमा। भोड़ि बाघ किहं भौ गौ दूमा। ६१।	सतनाम
	તાલા – 70	ᄪ
၂	काहा कर खीचिया, बोझ बड़ा घर दूर।	섬
सतनाम		सतनाम
"	वापाइ	$\lceil$
且	शहजादा मम कहा विचारी। चलो पन्थ ज्ञान निरुवारी।६२।	섥
सतनाम	दफा समेत भिक्त निजु हेता। ज्ञान सनीप प्रेम निजु एता।६३।	सतनाम
	अपने बोध आन कह बोधे। करि दिव्य दृष्टि गगन में सोधे। ६४।	
सतनाम	छुछुम छेमा होय प्रमीना। झिम किर साधु जगत में वीना। ६५। खग औ मीन चंचल है भाऊ। चंचल लोचन चहुँ दिशि धाऊ। ६६।	सतनाम
<u>ਜ</u> ਰ	खाग ओं मीन चंचल है भाऊ। चंचल लोचन चहुँ दिशि धाऊ।६६।  दृष्टि भीतर तब दृष्टि समावे। लागी झरि अमृत रस पावे।६७।	ם
	इमि करि हंस होय उजियारा। ममता मद सबे मेटि डारा।६८।	
सतनाम	साँच गोसइयांहिं कछु नहीं बीचा। अमी प्रेम रस तजि दे मीचा।६६।	सतनाम
괚	लघु बहु बचन बेकारा अहई। टूटि गौ हार गाँथन फेरि चहई।१००।	
  -		
सतनाम	क्षिमा सांगि दृढ़ ज्ञान हमारा। तुमसे कहों मम बारम बारा।१०२।	सतनाम
    F	5	#
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<sub>ਾ</sub> म

साखी - 99 शहजादा सुनि लीजिये, हंस वंश सुख राज। ज्ञान विरह यह दीजिये, कबहीं न होत अकाज।। चौपाई शाह फकर औ बस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा। १००३। विवेध सर्गुण गुण है निर्मुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा। १००३। सर्गुण गुण है निर्मुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा। १००६। अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा। १००६। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ। १००८। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ। १००८। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ। १००८। महि मण्डल औ शिश है सुरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा। १९९०। महि मण्डल औ शिश है सुरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा। १९९०। साखी - १९८ अविगति पुखं अमान। १९२२। साखी - १९८ अविगति पुखं अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम विचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता। १९९८। सासी उत्पात सत्युग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई। १९९६। स्वर्ग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिरत न जान। १९९८। सारी पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ। १९९६। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। १९२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। १९२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। १९२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। १९२२। स्वताम सतनाम	स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u> </u>
ज्ञान विरह यह दीजिये, कवहीं न होत अकाज।।  चौपाई शाह फकर औ वस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा।१००३। तैर्ने संगुण गुण है निगुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१००६। सर्गुण गुण है निगुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१००६। अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१००६। अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१००६। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००८। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००८। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००८। मिर मण्डल औ शिश है सुरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९०। महि मण्डल औ शिश है सुरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९०। साखी – १२  अवगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम विचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दु:ख दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९९३। तैर्ने स्वर्ग नर्क के सुख दु:ख दाता। दु:ख है नर्क सोई उत्पाता।१९१। कलयुग जरा मरण नियरान। केश श्वेत भव भिन्त न जान।१९१। कलयुग जरा मरण नियरान।। केश श्वेत भव भिन्त न जान।१९२। कलयुग जरा मरण नियरान।। केश श्वेत भव भिन्त न जान।१९२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१९२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। विरोध मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।		साखी – ११	]
चौपाई शाह फकर औ बस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा।१००३। विवेध मिरंकार अंकार न अहई। सगुण विनसि गुण किमि कर कहई १९०४। सर्गुण गुण है निर्गुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१००६। अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१००६। मीच नीच चाखो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००६। मीच नीच चाखो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००६। मीच नीच चाखो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१००६। मेहि जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१००६। महि मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९२। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमाना।१९२। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमाना।१९२। चौपाई पाप करे दु:ख दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९१३। विवेध स्वर्ग नर्क के सुख दु:ख दाता। दु:ख है नर्क सोई उत्पाता।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दु:ख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९१८। बात्तक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९६। विवेध सार्य पर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कन्क शोभा लन लहेई।१९९६। सांच वारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९९६। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१९२। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१९२। सीन मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१९२।	뒠	शहजादा सुनि लीजिये, हंस वंश सुख राज।	섥
शाह फकर औ बस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा।१०३। सिंही निरंकार अंकार न अहई। सगुण विनिस गुण किमि कर कहई।१०४। सगुण गुण है निर्गुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१०६। सगुण गुण है निर्गुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१०६। सभुण गुण है निर्गुण निराशा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६। अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुछा सागर पयेऊ।१०८। मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुछा सागर पयेऊ।१०८। मिह मण्डल औ शशि है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९१। महि मण्डल औ शशि है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९१। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम विचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःख दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। चौर स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोग।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोग। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोग।१९४। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिनत न जान।१९०८। साची पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। मानु पार्म एसी विति वित नाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानु पार्नम दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२। सीने मानु पार्नम दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	<b>A</b>	ज्ञान विरह यह दीजिये, कबहीं न होत अकाज।।	1
अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६। विनेह एक त्यागे एक संग्रह नीका। शिक्त के संग रंग यह फीका।१००। मीच नीच वाखे मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१०८। जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०८। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमाना हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। विनेह स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९४। वालि तुं युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९४। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिन्त न जाना।१९८। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२।		चौपाई	
अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६। विनेह एक त्यागे एक संग्रह नीका। शिक्त के संग रंग यह फीका।१००। मीच नीच वाखे मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१०८। जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०८। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमाना हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। विनेह स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९४। वालि तुं युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९४। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिन्त न जाना।१९८। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२।	ӈ	शाह फकर औ बस्ती दासा। तुमसे कीन्ह ज्ञान प्रकाशा।१०३।	सत्
अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६। विनेह एक त्यागे एक संग्रह नीका। शिक्त के संग रंग यह फीका।१००। मीच नीच वाखे मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ।१०८। जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०८। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। साखी - १२ अविगति पुर्ख अमाना हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। विनेह स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९४। वालि तुं युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९४। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिन्त न जाना।१९८। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२।	ᅰ	निरंकार अंकार न अहई। सगुण विनिस गुण किमि कर कहई।१०४।	큠
पक त्याग एक संग्रह नाका। शाक्त क संग रंग यह फोका। 500।  मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ। 9०६।  जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना। 9०६।  वेवहा नाम है अजर अमाना। को किव कहे भेद को जाना। 99०।  मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा। 99१।  साखी - 9२  अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन।  अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।।  चौपाई  पाप करे दुःख दारुन लहुई। पुण्य करे अच्छा गुन अहुई। 99३। विनेह  चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा। 99६।  बालक तो सतयुग यह अहुई। त्रेता कुमाल मगन मन लहुई। 99६। विनेह  बापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहुई। 99६। विनेह  चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ। 99६।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।		सर्गुण गुण है निर्गुण निराशा। निरा लेप गुन तरनी पासा।१०५।	
पक त्याग एक संग्रह नाका। शाक्त क संग रंग यह फोका। 500।  मीच नीच चाछो मिर गयेऊ। प्रेम सुधा सुख सागर पयेऊ। 9०६।  जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना। 9०६।  वेवहा नाम है अजर अमाना। को किव कहे भेद को जाना। 99०।  मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा। 99१।  साखी - 9२  अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन।  अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।।  चौपाई  पाप करे दुःख दारुन लहुई। पुण्य करे अच्छा गुन अहुई। 99३। विनेह  चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा। 99६।  बालक तो सतयुग यह अहुई। त्रेता कुमाल मगन मन लहुई। 99६। विनेह  बापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहुई। 99६। विनेह  चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ। 99६।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा। 9२२।	대메	अक्षय अशोग राग निहं रोगा। विमल विरोग ताप निहं सोगा।१०६।	सतन
जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०६। वैवहा नाम है अजर अमाना। को किव कहे भेद को जाना।१९०। मिह मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९। साखी - १२  साखी - १२  अवगित पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई  पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। वैविध सर्वा नर्क के सुख दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४। स्वर्ण नर्क के सुख दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४। विविध वारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोग।१९५। विविध वारा पन ऐसो बिति गयेऊ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९९७। विविध वारा पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। सिन्ध अल्डू चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोग।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोग।१२२। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोग।१२२।	ᄺ	एक त्यागे एक संग्रह नीका। शक्ति के संग रंग यह फीका।१०७।	크
वेवहा नाम है अजर अमाना। को किव कहे भेद को जाना।१९०। महि मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९१। चारि किर गुण योग बिछाना। पंचयें अविगति पुर्छ अमाना।१९२। साखी - १२  अविगति पुर्छ अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई  पाप करें दुःछा दारुन लहई। पुण्य करें अच्छा गुन अहई।१९१३। वैनेस स्वर्ग नर्क के सुछा दुःछा दाता। दुःछा है नर्क सोई उत्पाता।१९१४। चारिउ युग तब किरहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९१। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९६। वैनेस वारा पन ऐसो बिति गयेछ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेछ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	ᇦ		세
वेवहा नाम है अजर अमाना। को किव कहे भेद को जाना।१९०। महि मण्डल औ शिश है सूरा। जगत् ईश छिव है भिर पूरा।१९९१। चारि किर गुण योग बिछाना। पंचयें अविगति पुर्छ अमाना।१९२। साखी - १२  अविगति पुर्छ अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई  पाप करें दुःछा दारुन लहई। पुण्य करें अच्छा गुन अहई।१९१३। वैनेस स्वर्ग नर्क के सुछा दुःछा दाता। दुःछा है नर्क सोई उत्पाता।१९१४। चारिउ युग तब किरहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९१। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९६। वैनेस वारा पन ऐसो बिति गयेछ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेछ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	सतना	जाकर गुन तस कीन्ह बखाना। वेवाहा नाम अमृत सम जाना।१०६।	तना
साखी - १२ अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। देवा स्वर्ग नर्क के सुखा दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९६। द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुषा जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।		वेवहा नाम है अजर अमाना। को कवि कहे भेद को जाना।११०।	
साखी - १२ अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९३। देवा स्वर्ग नर्क के सुखा दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९६। द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुषा जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	ᆿ	मिहि मण्डल औ शिशि है सूरा। जगत् ईश छिव है भिरि पूरा।१९९।	섥
अविगति पुर्ख अमान हैं, त्रिय देवा तीन गुन। अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।। चौपाई पाप करें दुःखा दारुन लहई। पुण्य करें अच्छा गुन अहई।१९१३। स्वर्ग नर्क के सुखा दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९६। द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्ति न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	सत्	चारि करि गुण योग बखाना। पंचयें अविगति पुर्ख अमाना।११२।	नम
अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।।  चौपाई  पाप करे दुःख दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९१३। दिन्  स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९४।  चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५।  बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९७।  द्वापर तरुण तेज तब भौउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९७।  कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८।  चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६।  पान मान पंसो वित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०।  मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२।  मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।		*** **	
अगम निगम बिचारी के, तहवाँ पाप न पुण्य।।  चौपाई  पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९१३। विषे स्वर्ग नर्क के सुखा दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९४।  चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९७। बापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मीन पांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	크	3	स्त
पाप करे दुःखा दारुन लहई। पुण्य करे अच्छा गुन अहई।१९१३। विक्री स्वर्ग नर्क के सुख दुःखा दाता। दुःखा है नर्क सोई उत्पाता।१९१८। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःखा सुखा सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९९६। विक्रि योग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९६। विक्रि तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९९८। वारो पन ऐसो बिति गयेछ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेछ।१९६। विक्रि यारो पन ऐसो बिति गयेछ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेछ।१९६। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुषा जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	Ή	_	큠
स्वर्ग नर्क के सुख दुःख दाता। दुःख है नर्क सोई उत्पाता।१९१४। चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९६। द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२२। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।		· ·	١
चारिउ युग तब करिहें भोगा। दुःख सुख सम्पत्ति विपत्ति वियोगा।१९५। विष्ठे वालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।१९९। द्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।१९९। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।१९८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।१९६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२९। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	तनाम		सतन
बालक तो सतयुग यह अहई। त्रेता कुमाल मगन मन लहई।११६। विक्रिया स्वापर तरुण तेज तब भैउ। कामिनि कनक शोभा लन लहेई।११७। कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।११८। चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।११६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	색		1
कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।११८। वारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।११६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	ᆈ		
कलयुग जरा मरण नियराना। केश श्वेत भव भिक्त न जाना।११८। वारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।११६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	सतना		तनाम
चारो पन ऐसो बिति गयेऊ। काल दण्ड सिर ऊपर अयेऊ।११६। अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।			
अजहूँ चेत चेतिन चित लाई। दयावंत गुन कहा न जाई।१२०। मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	ᆿ		섥
मीन मांसु त्यागे रस भोगा। सतगुरु चरण सुमिरु निजुयोगा।१२१। विक्रियो मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।	सत		नम
मानुष जन्म दुर्लभ है नीका तजहु भर्म ज्ञान गुण जीका।१२२।		•	
6	-		47
सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u> </u>	मानुष जन्म दुलभा ह नाका तजहु भाम ज्ञान गुण जाका।१२२। ————	큠
g		तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u> </u>
Ш	साखी – १३	
閶	साधु भोजन नहिं भवन में, नहिं सतगुरु से प्रीत।	ধ্ব
सतनाम	भागर को जल अचवन, बारुण चाहत निति।।	सतनाम
Ш	चौपाई	
सतनाम	लाल रतन गरकाब कबीरा। पूर्ण ब्रह्म गुन गहिर गंभीरा।१२३ धर्म दास हंस उजियारा। नीर क्षीर विवरण किर डारा।१२४ दुई भाग क्षीर यह कहई। एक भाग जल भीतर रहई।१२५	
M W	धर्म दास हंस उजियारा। नीर क्षीर विवरण करि डारा।१२४	ᅵᆿ
सतनाम	क्षीर से नीर इमी लीन्ह निकारी। बिलिंग भयो सब बुद्धि बेकारी।१२६	।स्तना
图	दरिया दिल सब कोई इह अहई। दर्पण दर्श सदा सुख लहई।१२७	#
臣	वारे पारे देखु विचारी। वारिधि बारी गुण है अधिकारी।१२८	 
सतनाम	बिना जहाज किमि होखे पारा। बेवाहा नाम गुण घैचनिहारा।१२६	सतनाम
	खारों दरिया जल थल अहई। दीप दीप गुण प्रकट कहई।१३०	 
सतनाम	खारों दिरया जल थल अहई। दीप दीप गुण प्रकट कहई।१३० उड़िगन गगन रहे विस्तारा। गिन निहं सके वेद अधिकारा।१३१ सार शब्द गहों बहु भाँती। अनन्त कला सब जाति अजाती।१३२	l 삼
<b>H</b>		
Ш	साखी – १४	
नाम	बालापन ते साहब भजे, जग से रहे उदास।	सतन
뛤	नाम देव चन्दन भये, शीतल शब्द निवास।।	큠
	चौपाई ँ ँ रे ० ० ० २ २ २	لم
सतनाम	जहाँ तहाँ मैं देखा विचारी। त्यागे न भोग भाग सुख नारी।१३३	     
	अब अब कहत गया दिन सारा। भूले गर्बे मूढ़ गँवारा।१३४	`
围	दुई शहजादा मम गृह रहेऊ। भैं चेतिन चित्त गुण इमि कहेऊ।१३५	
सतनाम	सीरे दफा ताहि कहँ भाषा। ज्ञान विचारि एक मत राखा। १३६	  सतनाम
	शाह फकर फरजन्द हमारा। भौ दास गुण ज्ञान विचारा।१३७	'
톍	लघु औ दृग दोनों है भाई। समुझि ज्ञान गुण कहा बुझाई।१३८	_    삼
सतनाम	बस्ति शाह छोटा इह कहई। छापा सनदि मूल सो गहई।१३६ दफा हमार सबे सिर नावे। अदब अदाब भिक्त गुण गावे।१४०	सतनाम
	दफा हमार सबे सिर नावे। अदब अदाब भिक्त गुण गावे।१४० तेहि परवाना हुकुँम जो दीन्हा। लिखा हमार होय नहिं भीना।१४१	 
सतनाम	छापा सनदि ज्ञान परवाना। करे भिक्त सब सन्त सुजाना। १४२	
뇈	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	<b>코</b>
<sup>[</sup>   स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u> </u>
	साखी - १५	
巨	दोये शहजादा जानि के, लिखि दिया हम साँच।	4
सतनाम	आगे पीछे जो करे, सोई बचन है काँच।।	सतनाम
	चौपाई	
囯	साँच न मिटे झूठ मिटि जाई। वेवाहा यह अदल चलाई। १४३।	섥
सतनाम	देखा मम सभा दृष्टि पसारी। माया प्रिय बन्धु सुत नारी। १४४।	सतनाम
	यह फकीर आगे सब भैऊ। थै थपना यह इमि कर कियेऊ।१४५।	
킠	जाकर हद बेहद असमाना। वाको जीव सब सकल जहाना। १४६।	섬
सतनाम	जाकर हद बेहद असमाना। वाको जीव सब सकल जहाना। १४६। तिनही अकूफ दिया हमें आई। दर्शन देखि अमृत फल पाई। १४७।	1
	तिनहीं तख्त बख्त यह दियेऊ। दयावन्त दया बहु कियेऊ।१४८।	
테	अन्न कपड़ा का वकसिस कीन्हा। दफा तुम्हार न होय भलीन्हा।१४६।	स्त
सतनाम	अन्न कपड़ा का वकसिस कीन्हा। दफा तुम्हार न होय भलीन्हा।१४६। दुःख सुख में सुमिरे सब नीका। अवरि बात जाने सब फीका।१५०।	큄
	निन्दा स्तुति जो कोई करई। धोबी धोए मैल नहिं रहई।१५१।	1
सतनाम	गाँव ठाँव की कवन बड़ाई। हमके छोड़ि कहाँ फिरि जाई।१५२। कल कटम्ब बन्ध परिवारा। करे भिक्त सोर्ड निज सारा।१५३।	सत्
ᅰ	कुल कुटुम्ब बन्धु परिवारा। करे भिक्त सोई निजु सारा।१५३।	量
	साखी - १६	
तनाम	कुल कुटुम्ब सब निन्दिहं, निन्दिहं यह संसार।	सतन
सत	शब्द हमारा जिन छोड़ो, उतरहु भव जल पार।।	큄
	चौपाई	
सतनाम	लिखा हमार लागे जिन तीता। जाके भिक्त सोई जन हीता।१५४।	सतनाम
[ 타	दाखा छोड़ि सुगना उड़ि गैऊ। मास बिते यहवाँ चिल ऐऊ।१५५।	표
<b>—</b>	अब सुगना तुम करहु उपासा। बहुरि गयो सेमर के पासा। १५६।	اير
सतनाम	चोंच के मारे भुवा उड़ि गैऊ। मुर्छि परा तावरि तन ऐऊ।१५७।	सतनाम
H	लाल फूल विश्वास लोभौऊ। उड़ि गई माया भवन नहिं रहेऊ।१५८।	ㅂ
   <sub>백</sub>	सो धन चोर हाकिम ने लीन्हा। लागी आगि भसम करि दीन्हा।१५६।	4
सतनाम	देह तेरी निहं माया तेरी। ई निहं बिस भई काहु केरी।१६०।	सतनाम
	खरचहु खाहु सतगुरु की सेवा। महल में टहल पावे निजु मेवा।१६१। मिर जब गया पीछे पछतावे। फेरि निहं बहुरि माया में आवे।१६२। भर्मित फिरे भवन में केता। चिर चरण धरि पशु होए प्रेता।१६३।	"
<u>၂</u>	मरि जब गया पीछे पछतावे। फेरि नहिं बहुरि माया में आवे।१६२।	섳
सतनाम	भर्मित फिरे भवन में केता। चरि चरण धरि पशु होए प्रेता।१६३।	तनाम
	8	] .
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u> </u>
	साखी – १७	]
틸	गुरु कह सरबस दीजिये, तन मन अर्पो शीश।	<u></u>
सतनाम	गुरु बहियां गुरुदेव हैं, गुरु साहब जगदीश।।	सतनाम
	चौपाई	
뒠	सोई गुरु ज्ञान जो नर्क उबारे। तरिन धैंचि पार ले डारे।१६४।	  拾
सतनाम	जब प्रसाद सूरति महँ आवे। बहु भातिन्ह इह युक्ति बनावे।१६५।	旧
Ш	सोई गुरु ज्ञान जो नर्क उबारे। तरिन धैंचि पार ले डारे।१६४। जब प्रसाद सूरित महँ आवे। बहु भातिन्ह इह युक्ति बनावे।१६५। शकर सोहारी औ दिध मेवा। भिक्ति भाव से लावै सेवा।१६६।	
सतनाम	तापर कपड़ा श्वेत वोहारी। पाणि जोरि के विनय हमारी।१६७।	
Ҹ	शहजादा के आगे धरई। बहु विधि आनन्द मंगल करई।१६८।	ᆲ
	होये बरकती बास सुबासा। साहब घ्राणि लेहिं चहुँ पासा।१६६।	ı
सतनाम	भाव भक्ति यह यहि विधि करई। हंस दशा गुण निर्मल रहई।१७०	स्तन
[   	वर्ष रोज में यह गुण नीका। साहब कहा भिक्त का टीका।१७१।	<b>∄</b> 
ᆈ	तन मन धन साहब का अहई। जीवन थोर गुण शब्दहिं गहई।१७२।	ᆁ
सतनाम	सो हंसा छपलोके जावे। बहुरि न भवजल धक्का खावे।१७३।	त्म
	साखी - १८	
<del>기</del> 표	सोई हंस गुण सार है, जिन्हि मानहिं कहा हमारा।	सत
सत्	शब्द तेग इह गहि के, उतरे भव जल पार।।	111
Ш	चौपाई	
सतनाम	साधु महिमा इह शेष बखाना। औ महेश नारद मुनि जाना।१७४।	स्त
땦	साधु महिमा इह शेष बखाना। औ महेश नारद मुनि जाना।१७४। साधु के महिमा वेद जो कहई। कहा व्यास सुखदेव सुख लहई।१७५।	냽
	जाति पाति किछुवो नहिं अहई। बड़ा सोई साहब गुण गहई।१७६।	
सतनाम	सुपच से कवन है नीचा। बाजा घन्ट सबसे भए ऊँचा।१७७।	<u> </u>
┺	कृष्ण आपु प्रदक्षिण कीन्हा। धन धन साधु अमर पद चीन्हा।१७८	ᅵᆿ
   	साधु सोई जो दुर्मति खोवे। साच रहे अघ पातक धोवे।१७६।	세
सतनाम	साधु सोई कमला जल माहीं। संग रहे जल परसत नाहीं।१८०।	त्न
	एहि विधि रहे फिरे संसारा। ज्ञान विचारि करे उपकारा।१८१।	<b>"</b>
<u> </u>	साधु दर्श पद पंकज गहई। महा पाप दुःखा दारुण दहई।१८२।	 
सतनाम	कोटि तीर्थ साधुन्ह के पासा। मंजन करे जाय यम त्रासा।१८३।	- सतनाम
	9	_
LAI.	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	1

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	— म
	साखी - १६	
सतनाम	कारज से कारण कठिन, गया जीव के साथ।	섬
堀	कारण ते रावण गए, बीस भुजा दस माथ।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	साधु से कारण कोई ना करई। महा पाप दुःख दारुण सहई।१८४। महा पाप यम शासन करई। एहि विधि जाये चौरासी परई।१८५।	स्त
뛤	महा पाप यम शासन करई। एहि विधि जाये चौरासी परई।१८५।	<b>코</b>
	साधु सोई निर्मल गुण सारा। बारे दृष्टि करे उजियारा।१८६।	Ι.
सतनाम	ज्यों मराल मन कबहीं न मैला। मन और ज्ञान तोल महँ तौला।१८७। कही कमान होने दिन राती। तेहि नहिं काल करे उत्पाती।१८८।	सतना
F	कड़ी कमान धैचे दिन राती। तेहि नहिं काल करे उत्पाती।१८८।	由
ᆈ	ताके पास कामिनि नहिं जाई। मस्त हाल देखि दूरि पराई।१८६।	색
सतनाम	भांग अफीम पान निहं खाई। झैर अमी चाखे लव लाई।१६०।	तनाम
	एहि रहिन सुनो हो सन्ता। तेजहु मन मत भाव अनन्ता।१६१।	1
सतनाम	एक रस रहे एक गुण गावे। साधु लक्षण निजु प्रगटे तहाँ पावे।१६२।	섥
AG.	परिमल पारस वृक्ष है केता। जहां कुकाठ चन्दन भौ हेता।१६३।	सतनाम
	साखी - २०	
सतनाम	नाचे गावे ताल बजावे, धरे भर्भ का ओट।	स्त
붿	कहें दरिया नहिं पदिं समाना, है हीरा पै खोट।।	큠
	चौपाई	
सतनाम	साधु मन्दिल गुण तीर्था धामा। धूरि धूप करिये विश्राम।१६४।	सतनाम
F		
푀	साधु सरस गुण क्रोध संक्षेपा। पदुम प्रकाश वारि नहिं लेपा। १६६।	
सतनाम	साधु सुमित मित ज्ञान विरागा। मित मराल फिरि होहिं न कागा।१६७।	सतनाम
	इमि करि साधु जगत में डोले। पूछे बिना किछ बात न बोले।१६८।	1
耳	भोष बनाये ब्याधा सर जोरा। भभूत भर्म है भीतर कठोरा।१६६।	
सतनाम	कृषि कर्म काम निहं सोधा। क्रोध हंकार लड़िहं बड़ योद्धा।२००।	सतनाम
	लेन देन करि मल कहँ खावे। भीतर हंकार धुआँ मुख आले।२०१।	
सतनाम	दिल का मुर्चा धोऊ अभागा। ज्ञान विराग सुमित में जागा।२०२। इमि करि साधु सरस गुण कहेऊ। लाख में एक कहन को भैऊ।२०३।	स्त
सं		<b> </b> 쿸
	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	] म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	— म
	साखी – २१	
릨	कपट काटि काँटा कटेवो, काटु कुबुद्धि बन ठाट।	ඇ 건
सतनाम	सतगुरु दोष न दीजिये, यम रोकेगा बाट।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	खाोट मोट बाट निहं सूझेऊ। कपट काट भौ ऐसो अरुमैउ।२०४। होहु संत मत ज्ञान समोवै। कठिन काल पीछे जिन रोवै।२०५।	स्त
ᆲ		
	निर्मल थीर भव महँगे मोला। थीर नीर निहं अरध घट डोला।२०६।	
सतनाम	नीर सुखे सरवर दुरि डारा। तरूणा बिते भौ काम विकारा।२०७।	सतना
		1
且	सुत बित नारि जो कहे हमारा। दया विवेक न करे विचारा।२०६।	설
सतनाम	पल पल क्षण क्षण घटने लागा। ज्ञान विराग विवेक न जागा।२१०।	सतनाम
	एहि विधि केते गर्य यम द्वारा। सार शब्द सुनि लागु बेकारा।२११।	
सतनाम	एहि विधि केते गये यम द्वारा। सार शब्द सुनि लागु बेकारा।२११। अवगुण सब विधि गुण कछु नाहीं। तरनी टूट परा भव माहीं।२१२। केवट अनारी खोवनि हारा। परा चकोह विविधि बहु धारा।२१३।	41
सत	कवट अनारा खावान हारा। परा चकाह विविध बहु धारा।२१३।	큄
	साखी – २२	
सतनाम	झूठो मीठो लागई, साचो तीतो तात। थोरे पवन में डोलत है, ज्यों पीपर को पात।।	सतन
\frac{1}{2}	यार पवन म डालत ह, ज्या पापर का पाता। चौपाई	큠
 ਸ	वापाइ दश मास नौ जमा बनैऊ। तीन सौ साठ चिराबन्द लैऊ।२१४।	섬
सतनाम	ताहि ग्रीद एक मुकुट बनाया। दोय लाल तेहि बिच लगाया।२१५।	सतनाम
	नासा श्रवन दशन तहाँ शोभा। रसना घटरस बीजन लोभा।२१६।	
耳	ताहि नीचे दुई भुजा बनाया। तामें कर दस सखा लगाया।२१७।	Ι.
सतनाम	जंघ युगल चरण चारु पाया। डोलत फिरत भवन में आया।२१८।	सतनाम
	बाल कुमार तरुण पन ऐऊ। झुठ साँच बहु बात बनैऊ।२१६।	
सतनाम	एहि विधि भै गर्व गुण गामी। बिसरि गया नहिं अमृत आमी।२२०।	सतनाम
	मन मत माति बके बहु बाता। साधु सन्त के निकट न जाता।२२१।	耳
	े निन्दहिं साधु फिरि यम ने बाँधा। बहु विधि बन्धन ताहि धरि साधा।२२२।	נא
सतनाम	मन मत माति बके बहु बाता। साधु सन्त के निकट न जाता।२२१। निन्दिहं साधु फिरि यम ने बाँधा। बहु विधि बन्धन ताहि धरि साधा।२२२। बिसरि गयो जगदीश गोंसाई। नख सिख जिन्हि फल सभ लाई।२२३।	तिना
		] ~
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	—  म
	साखी- २३	]
巨	बिसरि गया चित चातुरी, मीत बिसारेवो जानि।	섴
सतनाम	यहाँ स्नेह लगाइया, यमपुर होइहें हानि।।	सतनाम
	चौपाई	ľ
上	कटि पटुका भाँवर दुई दीन्हा। बाँधि पींजरे मैना तब कीन्हा।२२४।	쇠
सतनाम	काँध कँधावरि हरदी वोरी। शोभे लीलाट चन्दन की खोरी।२२५।	सतनाम
	नैनिन्ह काजर कारिख कीन्हा। भये मगन सब मन निहं चीन्हा।२२६।	
巨	योग किया सिर सेहरा साधा। करि प्रपंच कंगन बहु बाँधा।२२७।	섴
सतनाम	लीन्ह लिवाय मन्दिर के गेऊ। आनन्द मंगल सब मिलि गैऊ।२२८।	सतनाम
	टेढ़ी चाल औ बैन अवेढ़ा। सासु ननदि संग कीन्ह बखोढ़ा।२२६।	
上	लगी पढ़ावन सुनु पिया मोरा। हमरी बचन करहु जनि भोरा।२३०।	섴
सतनाम	गुरु होय सिख सिखावनि लागी। अति करि प्रेम काम रस पागी।२३१।	सतनाम
"	माते बहु विधि सब अनहीता। मातु बचन सब लागे तीता।२३२।	Γ
且	अवगुण गुण निहं करे विचारा। बिनु गुण ज्ञान बुड़ा मझधारा।२३३।	섴
सतनाम	जो मम कहेवो बिरला केहु कियेऊ। बिनु गुण ज्ञान केवट किमि लहेऊ।२३४।	सतनाम
ľ	साखी – २४	'
<u> </u>	दया धर्म विवेक निहं, कौल किया सब भोर।	सत्
सतन	मातु पिता नहिं गुरु आज्ञा, बाँधि गये जिमि चोर।।	1111
ľ	चौपाई	
且	कनक बेरि सब नृप पगु डारी। मोतिन्ह माँग गूँथी बहु विधि नारी।२३५।	섥
सतनाम	बाँधे मुये बधुआ निहं जाना। हाड़ चाम सब खाक उड़ाना।२३६।	I
	छूटा गज बाज सब साथी। यम ने पकड़ि नाक धरि नाथी।२३७।	
픨	साधु असाधु यह करो विचारा। जैसन कर्म तहाँ ले डारा।२३८।	섥
सतनाम	लोह की बेरी सभो पगु डारी। जैसन धन तैसन दीन्हो नारी।२३६।	सतनाम
	बाजीगर ज्यों बाँधु बनाई। नाचिहं मर्कट द्वारे जाई।२४०।	
围	ज्ञान होय तब करे विचारा। बिनु गुन ज्ञान बूड़ा मझधारा।२४१।	섥
सतनाम	उलटा बेरि नारी पगु डारी। बाँधे रहो करौ रखावारी।२४२।	सतनाम
	रंग महल मानो पिंजरा भैऊ। मुनिअन्हि पकरि ताहि मह लैऊ।२४३।	1
크	लाल निकाल बाहर करि लीन्हा। फद फद करे रात और दीना।२४४।	47
सतनाम	छूटा बन्धन साधु जब भयऊ। उछलित प्रेम मगन मन रहेऊ।२४५।	सतनाम
	12	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म

साखी - २१ जैसे लता हुम में, अरुझि रहा फूल पात।  एहि विधि माया जगत् में, कैद किया गुण गात।।  चौपाई  कामिनि कनक लता लपटाना। अरुझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६। कैंचे च्यां महि मण्डल परे भुलाई। निकिल जाय ज्यों फिन मिन पाई।२४७। में उपिज मिण भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४६। वैद्यासा विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४६। वैद्यासा विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४६। वैद्यासा विष के महिमा कहि निहीं जाई। चेहे गौ गगन डोरि ताहा जाई।२४६। विद्यासा विष के महिमा कि निरित रहु नीचे। सार भाग पद नहिं तहाँ मीचे।२५०। नीच ऊँच पद पावहिं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५९। साथु के महिमा कि निरित रहु नीचे। सार भाग पद नहिं तहाँ मीचे।२५०। साथु के महिमा कि निरित रहु नीचे। सार भाग पद नहिं तहाँ मीचे।२५०। साथु के महिमा कि निर्म साथु गुण गाई। शेष सहस्र मुख चिरत्र सुनाई।२५४। साथी – २६ जल विनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साथु जन्म असाथु घर, तब शोभे कुल वंश।।  चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साथु जन्म असाथु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साथु जन्म असाथु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साथु जन्म ध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिवत प्यारा।२५६। साथु जन्म हे आवे जानी। तासो भर्म केहु जिम मानी।२६०। अन्न टन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६९। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। किनीर्स करिके मंगल चारा। एहि विध जीव के होय उबारा।२६४। किनीर्स करिनाम सतनाम	स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>—</u> म
पहि विधि मार्यो जगत् में, कैद किया गुण गात।।  चौपाई कामिनि कनक लता लपटाना। अठझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६। कैंसी ज्यों मिंह मण्डल परै भुलाई। निकिल जाय ज्यों फिन मिंन पाई।२४९। या उपि मिंग भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८। पाया उगर जो उगमग नाहीं। चिह गौ गगन डोरे ताहा जाहीं।२४६। चिन उज्ज पद पाविहें सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५९। तीच ऊँच पद पाविहें सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५९। तीच उज्ज पद पाविहें सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५९। तीच उज्ज पद पाविहें जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। तीच अठ महिमा कि निरं जाई। शेष सहर्स मुख चरित्र सुनाई।२५४। अर्थ से रिव शिश सब ते ऊँचा। अविर जीव जगत् सब नीचा।२५३। साधी - २६ जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। कैंग स्थम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। साथा भिक्त बरोबरि जाना। जान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। साथा भिक्त बरोबरि जाना। जान अदल सुनु सन्त सुजाना।२६८। जन्म मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२६०। अन्न उन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६९। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। स्यारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६५। किंन कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६५।			
चौपाई कामिनि कनक लता लपटाना। अरुझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६। क्षेत्र स्थां मिह मण्डल परै भुलाई। निकिल जाय ज्यों फिन मिन पाई।२४७। क्षेत्र पण भयो विष के नाशा। भै गौ पिरमल काठ सुवासा।२४८। पण्या उगर जो उगमग नाहीं। चिंक गौ गगन डोरि ताहा जाहीं।२४६। पण्या उगर जो उगमग नाहीं। चिंक गौ गगन डोरि ताहा जाहीं।२४६। चिंच ज्वंच पद पाविहें सन्ता। नीच से ज्वंच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ज्वंच पद पाविहें सन्ता। नीच से ज्वंच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ज्वंच पद पाविहें सन्ता। नीच से ज्वंच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ज्वंच पद पाविहें जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। नीच ज्वंच पद पाविहें जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। नीच ज्वंच पद पाविहें सन्ता। जविर जीव जगत् सब नीच।२५२। श्री साधु के महिमा कहि निहें जाई। शेष सहस्रं मुख चरित्र सुनाई।२५४। साखी - २६ जल विनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई हिन्द तुर्क संव त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५६। साधु जन्म मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिन्त प्यारा।२५६। साधु जन्म चानी।२६०। साधु जन्म चानी।२६०। साधु सम्त वनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६२। साधु प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६२। साधु प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। साधु कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६४।	네	-1	ধ্ব
कामिनि कनक लता लपटाना। अरुझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६। विवास मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त बरोबरि जाना। तासो भमें केहु जिन माना।२५६। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद विनेत्र को से रहि । सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें पहारा।२६६। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें पहारा।२६६। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२। सिरे जामा औ सर है छूला। छापा सनिद वोनह कहें मूला।२६२।	सत्	एहि विधि माया जगत् में, कैद किया गुण गात।।	크
उपिज मणि भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८। विष् मणि पाया उगर जो उगमग नाहीं। चिह गौ गगन डोरे ताहा जाहीं।२४६। विष चली सुरित निरित रहु नीचे। सार भाग पद निहं तहाँ मीचे।२५०। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच उन्तेस रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। जैसे रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। आदि अन्त थाके मुनि केता। साधु के महिमा है सिन्धु समेता।२५४। साखी – २६ जल विनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५८। विच पाया। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। विच माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५८। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४।		`	
उपिज मणि भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८। विष् मणि पाया उगर जो उगमग नाहीं। चिह गौ गगन डोरे ताहा जाहीं।२४६। विष चली सुरित निरित रहु नीचे। सार भाग पद निहं तहाँ मीचे।२५०। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच उन्तेस रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। जैसे रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। आदि अन्त थाके मुनि केता। साधु के महिमा है सिन्धु समेता।२५४। साखी – २६ जल विनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५८। विच पाया। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। विच माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५८। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४।	नाम	कामिनि कनक लता लपटाना। अरुझत सझुरही सन्त सुजाना।२४६।	स्त
उपिज मणि भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८। विष् मणि पाया उगर जो उगमग नाहीं। चिह गौ गगन डोरे ताहा जाहीं।२४६। विष चली सुरित निरित रहु नीचे। सार भाग पद निहं तहाँ मीचे।२५०। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच ऊँच पद पाविहं सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। नीच उन्तेस रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। जैसे रिव शिश सब ते ऊँच। अविर जीव जगत् सब नीच।२५३। आदि अन्त थाके मुनि केता। साधु के महिमा है सिन्धु समेता।२५४। साखी – २६ जल विनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५८। विच पाया। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। विच माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५८। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४।	쟆	ज्यों मिह मण्डल परै भुलाई। निकलि जाय ज्यों फिन मिन पाई।२४७।	큠
नीच ऊँच पद पाविहें सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। साधु के मिहमा किह निहं जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। जैसे रिव शिश सब ते ऊँचा। अविर जीव जगत् सब नीचा।२५३। थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहस्र मुख चिरत्र सुनाई।२५४। साखी - २६ जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। वैने पाया भिवत संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५६। विनाया भिवत बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न टन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय कोरिंस केनिंस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६४।		उपजि मणि भयो विष के नाशा। भै गौ परिमल काठ सुबासा।२४८।	
नीच ऊँच पद पाविहें सन्ता। नीच से ऊँच सुपच गुणवन्ता।२५१। साधु के मिहमा किह निहं जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। जैसे रिव शिश सब ते ऊँचा। अविर जीव जगत् सब नीचा।२५३। थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहस्र मुख चिरत्र सुनाई।२५४। साखी - २६ जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। वैने पाया भिवत संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५६। विनाया भिवत बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महं आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न टन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। विनाय कोरिंस केनिंस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६४।	तनाः	पाया डगर जो डगमग नाहीं। चढ़ि गौ गगन डोरि ताहा जाहीं।२४६।	सतना
साधु के महिमा कि निहंं जाई। जैसे सिन्धु जल थाह न पाई।२५२। कैसे रिव शिश सब ते ऊँचा। अविर जीव जगत् सब नीचा।२५३। थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहर्स मुख चिरत्र सुनाई।२५४। साखी - २६ जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जाते पात सह अववे जानी। तासो भर्म के हु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६९। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कीर्निस किरके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उवारा।२६५।	釆	and good from its first the det firstiges	ㅂ
जस राव शाश सब त ऊचा। अवार जीव जगत् सब नीचा।२५३। थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहर्स मुख चिरत्र सुनाई।२५४। अविक्रेस अन्त थाके मुनि केता। साधु के मिहमा है सिन्धु समेता।२५५। साखी - २६  जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। अन्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न टन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कीर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६४।	파		4
जस राव शाश सब त ऊचा। अवार जीव जगत् सब नीचा।२५३। थाके निगम साधु गुण गाई। शेष सहर्स मुख चिरत्र सुनाई।२५४। अविक्रेस अन्त थाके मुनि केता। साधु के मिहमा है सिन्धु समेता।२५५। साखी - २६  जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। अन्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न टन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कीर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६४।	सतना		तना
आदि अन्त थाके मुनि केता। साधु के महिमा है सिन्धु समेता।२५५। साखी - २६  जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई  जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। विमे शक्ति संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्त ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।			
साखी - २६ जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। वैने शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५६। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	표		섥
जल बिनु कमल न शोभई, मानसरोवर हंस। साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।। चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	सत•		1111
साधु जन्म असाधु घर, तब शोभे कुल वंश।।  चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। वैविधिः शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६९। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस किरके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।		,	
चौपाई जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। विक्रिंग संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६४।	नाम	<u> </u>	स्त
जाति पाति सब तजे बड़ाई। भया सिर खुला सबो सिर नाई।२५६। द्वी सित संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	संत		甘
शिक्त संग रंग सब त्यागा। जल रंग मिले ज्ञान इमि जागा।२५७। उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५६। माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।		···· <b>·</b>	
उत्तम मध्यम का एही विचारा। सिरे जामा का भिक्त प्यारा।२५८। हिन्ह माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	तनाम		सतन
माया भिक्त बरोबिर जाना। ज्ञान अदल सुनु सन्त सुजाना।२५६। विक्री जो दफा महँ आवे जानी। तासो भर्म केहु जिन मानी।२६०। अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	첖		<b>크</b>
अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	F		서
अन्न ठन्डा सब एके होई। हिन्दू तुर्क दूजा निहं कोई।२६१। हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	नतना		तिना
हिन्दू तुर्क सब जीव हमारा। समुझि सार भाषा टकसारा।२६२। सिरे जामा औ सिर है खूला। छापा सनिद दोनहु कहँ मूला।२६३। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।		9	"
प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	互		섥
प्रसाद बनाय तत्व यह भाषा। शहजादा के आगे राखा।२६४। व्यक्ति कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।	सतन		निम
कोर्निस करिके मंगल चारा। एहि विधि जीव के होय उबारा।२६५।			
13	नाम		सत्
	सत		큠
	   स		] म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	—  म
	साखी – २६	
IĘ	इह एके मन एके दशा, एके शब्द है सार।	삼
सतनाम	कहें दरिया मम भाखिया, गुण गहि होखे पार।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	अवतार हमार साँच यह जानों। एहि बात दोविधा मित जिन मानो।२६६। हद बेहद से आगे अहई। सो साहब गुण इहवाँ कहई।२६७।	स्त
ෂ		
L	साच कहों लिखा कागज कोरे। सो साहब आये गृह मोरे।२६८।	
सतनाम	अगम निगम सब कहि समुझाई। वेवाहा बेकीमति दिखाई।२६६। तन्तागिर जग अदब देखाया। सो साहब इहा हद पर आया।२७०।	सतन
F		
 ୴	अकूफ करे मुक्ति फल पावे। चौरासी कबहीं नहिं जावे।२७१।	4
सतनाम	अन्न कपड़ा सब उनके हाथा। ज्ञान सन्ते से होय सनाथा।२७२।	सतनाम
	शहजादा यह अहे हमारा। मनसफ दीया कहा टकसारा।२७३।	
सतनाम	यह दो फरजन्द जो अहे हमारा। इनके दीन्ह छापा टकसारा।२७४।	सतनाम
<b>HIG</b>	दफा हमार समुझि गुण गइहो। वेवाहा दरिया चित लइहो।२७५।	111
	साखी - २८	
सतनाम	सिरे दफा इन्हें जानिये, अदब आदाब सिर नाय।	सत्न
   		団
	चौपाई	
सतनाम	साहब जब छपलोक बतैऊ। कोर्निस करि अर्ज मम लयऊ।२७६। यह अन्नवाँ वहाँ है की नाहीं। सोई बचन कहिये मम पाहीं।२७७।	<u></u>
F		
   	यह अन्नवाँ वहाँ कबिहं न होखे। बहुत मीठा अमृत रस पोखे।२७८।	
सतनाम	अमर फूल और अमर दोलइचा। फिरि निहं उलिट फिरि निहं घैचा।२७६। पलँगे पहप छत्र सिर छाजे। सही विधि हंस बहत सखा राजे।२८०।	तिना
  里	बहुत बुलन्द मृत्युलोक बशाया। मन रंझे सबे अरुझाया।२८१।	섥
सतनाम	हदिहं पर छपलोक जो कहई। हद से वाएब वोह वाये निहं अहई।२८२।	
	उत्तर दिशा है शहर हमारा। अमर लोक तहँ हंस करारा।२८३। मैं ने कहा कही नाहें ही है। निश्चम रहे ऐस नहिं फी है। २८४।	
सतनाम	मैं ने कहा कही तुम्हें दीजै। निश्चय रहे प्रेम नहिं छीजै।२८४। कुदरती मेवा उहँवाँ पाई। युग युग के सब क्षुधा बुताई।२८५।	सतनाम
堀		ם
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_  म
		_

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>म</u>
	साखी - १६	]
ᆈ	उत्तर दिशा पांजी अहै, पल पल करे जिन भोर।	샘
सतनाम	तहाँ के हंस गमन करे, कहा जो माने मोर।।	सतनाम
	चौपाई	"
Ļ	साहब कहेवो गुप्त करि राखा। सो मम भेद प्रकट यह भाखा।२८६।	لد
सतनाम	खाक बाव आब आतश लाया। सिकम माए को मरकाव बनाया।२८७।	सतनाम
꾟	शीन साफ मुखा नूर विराजे। शोभा सुन्दर बहु विधि छाजे।२८८।	크
	गिर्द महल चहुँ दिशि बनाया। बीच बीच कनक चित्र लिखाया।२८६।	
सतनाम	तख्त बनाय खाड़ा तहाँ किया। हीरा जवाहिर ता बीच दिया।२६०।	सतनाम
택	किह न जात तख्त का शोभा। बैठा तापर मन इमि लोभा।२६१।	표
	आम खास खुशबोई केता। मोती झालरी झनकै सेता।२६२।	
सतनाम	कंचन पलंग तहां लै डारा। हीरा मानीक है उजियारा।२६३।	सतनाम
첖	बेगम औ सहेलियां केता। कोर्निस करिहं प्रेम निजु हेता।२६४।	<b>코</b>
	खोज खवास चँवर सिर डारा। अत्र चिराग किन्ह उजियारा।२६५।	1
सतनाम	अठारह लाखा फौज है एता। तुर्की ताजी पायल केता।२६६।	सतनाम
덂	तब मम देखा दृष्टि पसारी। इनके किमि करि लेऊँ निकारी।२६७।	<b> </b>
	साखी - ३०	
킠	साया – २० सिरे दफा सुल्तान मम, अब किछु करों उपाय।	섬기
संत	इनके लेई निकालेऊँ, सिफ्ति मेरो गुन गाय।।	긜
	इनक एइ निकालक, स्तिपत मरा गुन नाय ।। चौपाई	
크	·	섥
सतनाम	किन्ह निमेरा दिन बहु बीता। जिन्दा जागृत रहे हंस के हीता।२६८।	
	अबदुलह खाँव रुजू तब भयऊ। फौज निकाल बाहर तब कियेऊ।२६६।	
圓	कुदरति आय परा मैदाना। नौबत बहु विधि हना निशाना।३००।	섥
सतनाम	तलाब ऊपर मम बैठा जाई। दर्शन करिहं लोग सब आई।३०१।	सतनाम
	वजीर से सब मिलि बात जनाया। एक फकीर बेकीमति जो आया।३०२।	
国	झलके दीदम शोभा बहु भाँती। बरखत नूर कोई अहे अजाती।३०३।	섳
सतनाम	वजीर कहा बादशाह से जाई। फकर बड़ा फकीर कोई आई।३०४।	
	सिफ्ति बहुत जो हमें सुनाया। मम वजीर तुम्हें खबरि जनाया।३०५।	
王	फकीर दो चन्द तुमसे जो अहई। दर्शन कीजे भला सब कहई।३०६।	4
सतनाम	उन्हके दोय सब नीका। और खालक जानो सब फीका।३०७।	सतनाम
12	15	4
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	_ म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	— म
	साखी – ३१	
ᆒ	तख्त तरवा पर बैठि के, पहुँचे उहवाँ जाय।	섥
सतनाम	संग वजीर हाजिर है, सिफ्ति किन्ह बनाय।।	सतनाम
	चौपाई	
सतनाम	तख्त तरवा से नीचे हुजिये। करि सलाम अदब सो रहिये।३०८।	सतनाम
- 판	, ,	큠
<u> </u>	नूर सो दीदम गया छपाई। बहुत अदब उन्हें के दिल आई।३१०।	21
सतनाम	पूछन लागा कहाँ ते आई। इसम कहों कवन समुझाई।३११।	सतनाम
   	\	#
l E	वाहि शहर से हम चिल आई। यह सब कुदरित मेरी बनाई।३१३।	4
सतनाम	सुल्तान के दिल में खातरा ऐऊ। सतपुरुष खोदाये के कहेऊ।३१४।	सतनाम
ľ	सिलाम कार उठा तब आइ। तख्त तरवा पर बठा जाइ।३१५।	
सतनाम	तम्बु के बीच में पहुँचा आई। कोर्निस सब मिलि किया बजाई।३१६।	सतनाम
सत	कड़ी नजर वजीर पर भौऊ। हमके लेई उहा तुम गयेऊ।३१७।	큄
	वेवाहा के केहु ना देखोऊ। मर्कब बनाये दृष्टि में पेखोऊ।३१८।	
सतनाम	कोर्निस बजाये वजीर इमि कहेऊ। फकर खोदाय दुजा नहिं अहेऊ।३१६।	स्तन
표	ताला - २२	큠
  -	तब सुल्तान ठन्डा भये, अब कछु कहा न जाय।	لم
सतनाम	यह कुदरति मम देखिया, फिर पीछे पछताय।। चौपाई	सतनाम
   	पापा२ साहब आपु निमेरा गयऊ। फिरि पीछे यह खोजत भयऊ।३२०।	3
] 크		설
सतनाम	खोजे सब मिलि फौज में जाई। उदास भया दिल कछु न सोहाई।३२२।	सतनाम
	खोजी हेरि सब जामा भयऊ। वह कुदरित कतिहं नही पयऊ।३२३।	
सतनाम	अबदुल्लह खाँव अर्ज तब कियऊ। साहब आपु अगम कहँ गयेऊ।३२४।	सतनाम
सत	इनके अब हम लेव निकारी। देई अकूफ फौज दूरि डारी।३२५।	ם
	सुल्तानिहं फिकिरि जिकिरि यह भयऊ। वेवाहा वह कहवाँ गयऊ।३२६।	
सतनाम	काम न आवे फौज जहाना। तर्क किया तब सिफ्ति बखाना।३२७।	सतनाम
색	16	표
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	」 म

स	तिनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	<u> </u>
	छोड़ा तख्त बेगम सब झारी। हाय हाय सब करे पुकारी।३२८।	
팉	निकलि गये केहु अन्त न पयऊ। यह कुदरित कछु कहत न अयऊ।३२६।	4
सतनाम	साखी – ३३	4011
	धन्य धन्य सब कहत है, सिफ्ति कहा नहिं जाय।	
匡	तर्क किया सुल्तान ने, वा कुदरित सभ पाय।।	4
सतनाम	चौपाई	4011
	एक हंस दोई देह विराजे। छत्र हमार दोनों सिर छाजे।३३०।	
匡		
सतनाम	दीन का तख्त तुम्हें यह दीन्हा। तुम अपने दिल खुश कै लिन्हा।३३२।	4011
	करों अदल अदब जग फेरा। वेवाहा निजु नाम है मेरा।३३३।	
I I I I		
뒢		4011
	सुरति डोरि चित चेतिन अहई। छापा सनदि मूल सो गहई।३३६।	
IĘ	सहज योग भोग कहँ त्यागे। सुक्ष्म इन्द्री ज्ञान में जागे।३३७।	- 1
सतनाम	उज्जवल दशा हंस तब भयऊ। मंजन मैल धोखा सब गयऊ।३३८।	4011
	विमल पुनीत प्रेम रस पीवे। छपलोक में युग युग जीवे।३३६।	
틝		1111
सतनाम	आवागमन नेवारी के, छपलोक में जाय।	1 1
	भव भागर नहिं देखिए, एहि विधि कहा बुझाए।।	
सतनाम	चौपाई	4011
뭰	यह धोखा जिन जाने कोई। बचन हमार दुजा निहं होई।३४०।	1 1
	बिनु देखो कथो बहु बानी। भोष अलेखा लेहु पहचानी।३४१।	
सतनाम	तुम्हार कहा माने जब दासा। निश्चय है छपलोकहि बासा।३४२।	4011
된	साखी शब्द सीखा भुलवावे। यम दारुण तेहि दाव लगावे।३४३।	1
	है छपलोक साच मम कहेऊ। यह झूठ जाने काल बसी भेयऊ।३४४।	
सतनाम		40114
		=
सतनाम		410114
  된		=
,,,	ातनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	ੁ ਸ਼ਿ
		-

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	— म
П	हंस दशा प्रेम लव लावै। मानसरोवर मोती पावै।३४६।	
सतनाम	साखी – ३५	सतनाम
4	तुम्ह शहजादा मम हों, ज्ञान जो कहा विचारि	큠
	जो निश्चय कै जानहिं, भव जल जाहिं न हारि।। चौपाई	
सतनाम	यापाइ जंगली फूल है बहु विधि भाँती। तामें भँवर रहा मद माती।३५०।	सतनाम
釆	वाके छोड़ि कतिहं नहीं जावे। बाही फूल में जन्म गँवावे।३५१।	1-
ᆈ	<del>-</del> (	
सतनाम	अनन्त फूल फूला सब झारी। बिनु सींचे सब लता पसारी।३५२। पदुम प्रकाश बिरला केहु देखा। अविगति कही अजर के रेखा।३५३।	तना
15	ऐसे फूल है सब नर नारी। भिक्त बिसारि बन्धन ग्रीव डारी।३५४।	1
巨		
सतनाम	साहब छोड़ावे तब यह छूटे। नहीं तो काल सकल जीव लूटे।३५५। मारे जारे देई अवतारा। मन के जाल बन्धन बहु डारा।३५६।	1111
П	जैसे मरकट बाँधि नचावे। घर घर काल तमाशा लावै।३५७।	
सतनाम	काहें बिसारहु फूल अनूपा। एहि विधि अरुझे बड़ बड़ भूपा।३५८। वोय फूल स्वैन मिर न जावे। सदा सजीवन सो गुण गावे।३५६।	सत्
सत	वोय फूल सुवैन मिर न जावे। सदा सजीवन सो गुण गावे।३५६।	큠
	अजर अमान जरे नहिं कबहीं। वोय सतवर्ग सदा गुण अहहीं।३६०।	
तनाम	साखी – ३६	स्तन
诵	वोय सतवर्ग सर्व ऊपरे, जिन्दा अजर अमान।	큠
ᆈ	जीव मुक्तावहीं जगत् में, हमके बना वेवान।।	샘
सतनाम	चौपाई	सतनाम
	फूल गुलाब है बहु किवधि नीका। अत्र हुआ महँगे मोल बीका।३६१।	
且	वाकी नजिर बहुत सोहाई। शीतल चन्दन चरचि चढ़ाई।३६२।	섥
सतनाम	ज्ञान विचारि भया निजु दासा। सो गुलाब सतगुरु के पासा।३६३। द्वाल बन्द सिपाही अहई। शब्द सांगि यह निशा दिन गहई।३६४।	सतनाम
П	खाल बन्द । सपारा जरुरा राष्ट्र सामि यर । मारा । दम मरुरारद०। खुशहाल दास फकीर है नीका। रूखा सूखा नहिं जानत फीका।३६५।	
सतनाम	अन्न कपड़ा कबहिं नहिं जोवे। प्रेमप्रीति दुर्मति कहँ खोवे।३६६।	सतनाम
괢	मुरली दास दिवान करि लीन्हा। जो गुण रहा सो प्रगट कीन्हा।३६७।	큠
	जग में जाये अकूफ चलावे। बहियाँ होय के आनि मिलावे।३६८।	
सतनाम	इमि करि भै गौ। मुरली दासा। यहि विधि आनन्द प्रेम सुवासा।३६६।	सतनाम
\F	18	<b>–</b>
सं	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	<u>-</u> म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	ाम
	शहजादा दोये हमरे पासा। शाह फकर औ बस्ति दासा।३७०	Ī
ᄩ	साखी – ३७	4
सतनाम	शहजादा मम दोये हैं, मनसफदार हमार।	सतनाम
	सदा अदब सिर राखिये, ऐसी भिक्त करार।।	
lĘ	चौपाई	4
सतनाम	मिहरबान दास मम बालक अहई। मातु के संग सदा वोय रहई।३७१	सतनाम
	बाल कुमाल तरुण पन भौऊ। हुआ फकीर सैल कह गैअऊ।३७२	ı
闦	करे सैल फेरि थै पर आवे। मातु के संग सदा गुण गावे।३७३ जाके ज्ञान हो भारि पूरा। सोई जन जगत् महँ सूरा।३७४	4
सतनाम	जाके ज्ञान हो भारि पूरा। सोई जन जगत् महँ सूरा।३७४	니뒾
	बिना ज्ञान गिम कहाँ सो पावे। ज्ञान विचारि अमरपुर जावे।३७५	
सतनाम	अमरपुर झरि बहुत सोहाई। एहि विधि प्रेम मगन होय जाई।३७६ अहे साँच झूठ जनि जाने। सो छपलोक पयाना ठाने।३७७	· [점
सत	अहे साँच झूठ जिन जाने। सो छपलोक पयाना ठाने।३७७	∄
	सिरे जामा सि खुला अहई। ज्ञान गमी छापा निजु गहई।३७८	- 1
सतनाम	सनिद हमार करे पहचानी। झूठ तेजि अमृत रस सानी।३७६ किमि करि कहों विविधि विस्तारी। सभकी सनिद हजूरे डारी।३८०	1 44
됐	किमि करि कहों विविधि विस्तारी। सभकी सनदि हजूरे डारी।३८०	미클
	जो जन दफा हमारा अहई। सब सेवक साहब का कहई।३८१	ı
नाम	भूखो भक्ति ज्ञान नहिं आवे। आतम मरि विकल होय जावे।३८२	삼 각
_ ਜ਼ਰ	साखी - ३८	큠
	एहि अर्ज सुन लीजिये, कोर्निस करि सिर नाय।।	
सतनाम	अन्न कपड़ा कह दीजिए, इमि तेरो गुण गाय।।	सतनाम
Ή	चौपाई	==
	सोई सोहागिनी पिया रंग राती। सोई सोहागिनि कुल नहिं जाती।३८३	1
सतनाम	सोई सोहागिनि पिया पहचाने। तन मन वारि भक्ति निजु ठाने।३८४	<u> </u>
판	कपड़ा श्वेत सुगन्ध सोहाई। लाल पियर के नगीच न जाई।३८५	1
	भई युगल इमि पिया के साथा। आनन्द मंगल सदा सनाथा३८६	يم ا
सतनाम	सोहागिन सो पिया हुकुम जोगावे। निशा दिन सेवा खशम के लावे।३८७	सतनाम
  E	अभरण दूरि करि काँच की पोती। सब सखियन महँ निर्मल ज्योंति।३८८	<del> </del>
सतनाम	पिया के चरण सदा इमि लोचे। रहे सनीप अघ पातक मोचे।३८६ शाहजादि है अजदा मेरी। मेहर कीजै कहा करि जोरी।३६०	- <b>생</b> (1 H
	19	-
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सत	_   म

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	म
	नाम दुलह है बहुत दुलारी। दया करो अध पातक जारी।३६१। दुःखा मेटहु तुम सुखा के दाता। जाते भिक्त प्रेम रस राता।३६२। गरीब नेवाज है नाम तुम्हारा। दया करो भव सिन्धु के पारा।३६३।	
王	दुःखा मेटहु तुम सुखा के दाता। जाते भिक्ति प्रेम रस राता।३६२।	4
सतनाम	गरीब नेवाज है नाम तुम्हारा। दया करो भव सिन्धु के पारा।३६३।	1114
"	साखी – ३६	
王	सोई सोहागिन प्रेम रस, करे पिया से नेह।	1
सतनाम	आगत सोच विचारहु, निहं तो मुए या तन खेह।।	सतनाम
	चौपाई	"
耳	राय मती कुल सब कहँ त्यागी। भिक्त विचारि ज्ञान में जागी।३६४।	4
सतनाम	राय मती कुल सब कह त्यागी। भिक्त विचारि ज्ञान में जागी।३६४। त्यागा कुल कुटुम्ब सब जाती। सतगुरु चरण प्रेम रस माती।३६५।	1
P	हुकुँम हमार सदा जोगावे। बिना हुकुँम कतहीं नहिं जावे।३६६।	
᠇	ध्यान हमार सदा यह जोहे। ऐसी भिक्ति प्रेम रस सोहे।३६७। सो कुल आगर कुन में नीका। गयो बिहाय अविर सब फीका।३६८।	샘
सतनाम	सो कुल आगर कुन में नीका। गयो बिहाय अवरि सब फीका।३६८।	विम्
א	शाह फकर की दासी अहई। पतिब्रता वोये निसदिन गहई।३६६।	"
푀	शाह फकर की दासी अहई। पतिब्रता वोये निसदिन गहई।३६६। अपने पीया के हुकुम जोगावै। अविर बात कछुवौ नहीं भावै।।४००। यहि भिक्त वोए निजु किर जाना। अपने चित में कीन्ह मन माना।४०१।	섬
सतनाम	यहि भक्ति वोए निजु करि जाना। अपने चित में कीन्ह मन माना।४०१।	तिना
	ि अपने हजर श शपना कान्हा। वचन हमार हाय नाह भाना।४०२।	
ᇁ	जो हम कहा लिखा इन्ह दासा। बस्ति नाम है गुण प्रकाशा।४०३। जो हम कहा लिखा गुण ज्ञाता। आखर युगल प्रेम रस राता।४०४।	세
सतनाम	जो हम कहा लिखा गुण ज्ञाता। आखर युगल प्रेम रस राता।४०४।	तिना
P>	शाहजादा कहँ बखशिश भैऊ। दोनों जने मिलि ज्ञान गुण गैऊ।४०५।	"
ᄪ	दअल हमार अकूफ है नीका। सक्ति के संग रंग जानु फीका।४०६।	세
सतनाम	साखी - ४०	सतनाम
  }	थोरी उमरि तर्क किया, साहब निबाहिहंं ओर।	"
ᄪ	दोय फरजन्द साहब के आगे, कबहिं न करिये भोर।।	세
सतनाम	साखी – ४१	सतनाम
<b>⊮</b>	ज्ञान सम्पूर्ण प्रेम रस, देखत अर्ध अमान।	1
F	मति मराल सुगन्ध अंग, इमि पै करत न पान।।	세
सतनाम	चौपाई	सतनाम
₽v	जल हैं ज्ञान बुद्धि है माया। इमि है क्षीर धर्म है दाया।४०७।	ᅤ
ᇤ	नीर क्षीर संसृत सब अहई। जल के घैंचि क्षीर नहिं लहई।४०८।	12
सतनाम	सोई हंस कुल वंश कहावे। नीर क्षीर इमि विवरण लावे।४०६।	सतनाम
F	20	#
म	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	」 मि

स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम	— म
	भक्ति शक्ति दुवो संसृत अहई। दूवो युगल विलगि किमि कहई।४१०।	
텔	भिक्ति शिक्ति दुवो संसृत अहई। दूवो युगल विलिग किमि कहई।४१०। ज्ञान अलग है अतीत अमाना। शिक्ति भिक्ति जगत परवाना।४११। ज्ञान के मगु पगु धरे न कोई। तर्क तेज निर्धन अति होई।४१२।	쇩
सतनाम	ज्ञान के मगु पगु धरे न कोई। तर्क तेज निर्धन अति होई।४१२।	크
Ш	धरे पगु डगमग निहं होई। ब्रह्म सम्पूर्ण मल सब धोई।४१३।	
सतनाम	ज्ञान लाल जग ललित में लोभा। भया अमोल पुरुष संग शोभा।४१४।	सतनाम
땦	वारिज वारि जिमि रेहे अलेपा। रहे निकट इमि जल कहँ खेया।४१५।	
Ш	ज्यों जल मीन झीन है एता। निकल गया केहुँ देखु न खोता।४१६।	
सतनाम	साखी - ४२	सतनाम
색	खग आसमान मीन जल बसे, ए दो वाट अकथ।	코
	आवत जात न देखिये, दीन दिवाकर रथ।।	21
सतनाम	चौपाई	सतनाम
   	ज्ञान गमी दोनों पहचाना। भाया अनन्त मन जाल पुराना।४१७।	#
<sub>피</sub>	मन की सिन्ध घट घट में अहई। मो में तुममें जल में अहई।४१८।	섬
सतनाम	गिह के मूल दृष्टि में पेखो। अहे अनन्त एक तब देखो।४१६।	सतनाम
	गार तरा पुर रज तरा राहा उपना जात प्रमा तत ताहार रजा	
国	पल में योजन चारि जो गयऊ। उदय होय अस्त फेरि भयऊ।४२१।	석기
सतन	आवत मन के देखों न कोई। घट में पैठ प्रकट तब होई।४२२। मने विश्वम्भर मन जगदीशा। मन अवतार धरि मन है ईशा।४२३।	1111
Ш	यह मन कवन कवन अरुझाना। सनकादिक ब्रह्मादिक जाना।४२४।	
सतनाम	मन प्रभुता सामरथ जो कीन्हा। दैतन्हि मारि राज छोरि लीन्हा।४२५।	सतनाम
सत	जाके निर्मुण वेद यह कहई। सर्मुण स्वरूप देह धरि लहई।४२६।	ם
Ш	साखी – ४३	
सतनाम	रवि को छवि यह क्षित पर, यह निर्गुण को भाव।	सतनाम
诵	छवि से रवि नहिं होत है, निर्गुण सर्गुण को राव।।	표
	ग्रन्थ ज्ञान मूल पूर्ण	21
सतनाम	7 4 411 KI ZI	सतनाम
平		#
 ਸ		샘
सतनाम		सतनाम
	21	
स	तनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतनाम सतना	म